Chapter 4

bihar board 9th class history notes प्रथम विश्वयुद्ध (1914)

प्रथम विश्वयुद्ध (1914)

महत्वपूर्ण तथ्य : विश्व के इतिहास में 1914 का वर्ष एक ऐसे युद्ध के लिए जाना जाता है जिसने विश्व के सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया था। इस युद्ध में इन देशों ने अपने सम्पूर्ण संसाधन इसमें झोक दिए थे। इससे सम्पूर्ण विश्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे प्रभावित हुआ था। इस युद्ध ने कई देशों के राजनैतिक आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक ढाँचा ही बदल दिया था।

इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :

(i) साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप अपने बाजारों के विस्तार के लिए उपनिवेशों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। इस दौड़ में जर्मनी एवं इटली का प्रवेश बहुत बाद हुआ। 1914 ई. तक जर्मनी औद्योगिक क्षेत्र में बहुत प्रगति कर चुका था। जर्मनी को कच्चे माल तथा

फिर तैयार माल के खपत के लिए बाजार अर्थात् नए उपनिवेशों की जरूरत थी। अधिकांश उपनिवेश पुराने साम्राज्यवादी देशों के बीच बँट चुके थे। इसलिए जर्मनी ने पतनशील तुर्की साम्राज्य पर अपना अधिकार करना चाहा। 1905 ई. के रूस-जापान युद्ध में जापान के विजय से जापान की साम्राज्यवादी लालसा परवान चढ़ने लगी थी। दूसरी तरफ अमेरिका भी शक्तिशाली राष्ट्र रूप में उभर चुका था। दूसरी ताकत के उभरने से उसके हितों को खतरा था।

(ii) 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक यूरोप के देशों में राष्ट्रीयता के विकास के कारण समान जाति, धर्म, भाषा तथा ऐतिहासिक परम्परा के लोग मिलकर एक साथ अलग राष्ट्र का निर्माण चाहने लगे थे। तुर्की साम्राज्य तथा आस्ट्रिया-हंगरी के अधिकांश निवासी स्लाव जाति के निवासी थे। इसलिए उन्होंने सर्वस्लाव आंदोलन शुरू कर दिया। इसी तरह सर्वजर्मन आंदोलन शुरू हुआ जिसका लक्ष्य बाल्कन प्रायद्वीप का विस्तार करना था। इस प्रकार उग्र राष्ट्रवाद ने यूरोपीय देशों के आपसी संबंधों को तनावग्रस्त बना दिया।

(iii) यूरोपीय देशों ने अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए अपना सारा ध्यान सैनिक शक्ति पर केन्द्रित कर रहे थे। फ्रांस, जर्मनी आदि प्रमुख यूरोपीय देश अपनी राष्ट्रीय आय का 85% सैनिक तैयारियों पर व्यय कर रहे थे। 1913-14 ई. में फ्रांस के पास 8 लाख, जर्मनी के पास 7 लाख 60 हजार और रूस के पास लगभग 15 लाख की स्थायी सेना थी। जल सेना के क्षेत्र में शुरू से ही इंग्लैंड का वर्चस्व रहा जिसे कम करने के लिए जर्मनी ने जहाजी बेड़ा बनाना

शुरू कर दिया। 1912 ई० में जर्मनी ने इम्परेटर नामक जहाज बनाया जो उस समय का सबसे बड़ा जहाज था।

(iv) उपनिवेश विस्तार की अभिलाषा के लिए शक्तिशाली देश अपने-अपने हितों के अनुसार गुटों का निर्माण करने लगे। परिणामस्वरूप सम्पूर्ण यूरोप गुटों में बँट गया। सन् 1879 ई० में जर्मनी ने आस्ट्रिया-हंगरी तथा इटली के साथ मिलकर त्रिगुट संधि का निर्माण किया। यह त्रिगुट जर्मनी

ने फ्रांस के विरुद्ध बनाया था। इस त्रिगुट के विरोध में फ्रांस, रूस और ब्रिटेन ने 1904 ई० में एक त्रिदेशीय सन्धि बनाई। इन दोनों गुटों की उपस्थिति ने युद्ध को अनिवार्य कर दिया था। घटनाक्रम-1904 ई. में आपसी समझौते के फलस्वरूप ब्रिटेन को मिस्र उपनिवेश स्थापित करने की छूट दी तथा फ्रांस को मोरक्को प्राप्त हुआ। 1911 ई० में फ्रांस ने मोरक्को पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया। 1904 ई० में आस्ट्रिया ने तुर्की पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। जर्मनी का चांसलर फ्रांस को पंगु बना दिया। उसने फ्रांस के धनी प्रदेशों पर कब्जा कर रखा था।

–

युद्ध की शुरुआत-28 जून, 1914 को आर्क ड्यूक फर्डिनेण्ड की बोस्निया की राजधानी साराजोवो में हत्या हो गई।

https://www.evidyarthi.in/

आस्ट्रिया ने इस घटना के लिए सर्बिया को जिम्मेदार ठहराया तथा सर्विया के समक्ष कुछ माँगें रखीं । सर्विया ने उन्हें मानने से इनकार कर दिया । अत: 28 जुलाई,
1914 ई० को आस्ट्रिया ने सर्विया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी । रूस उसका मित्र देश था। अत: वह भी युद्ध में शामिल हो गया । जर्मनी ने 1 अगस्त, 1914 को रूस और 3 अगस्त, 1914 को फ्रांस के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी । फ्रांस पर दबाव डालने के लिए 4 अगस्त
को सेना बेल्जियम में घुस गई । इस तरह यह युद्ध व्यापक रूप से शुरू हो गया ।
युद्ध का अन्त-1914 तक रूस के 6 लाख से अधिक सैनिक मारे जा चुके थे । रूस की अर्थव्यवस्था भी खस्ता हो चुकी थी, बोल्शेविक सत्ता के सरकार में आते ही इसके प्रमुख लेनिनने दूसरे के क्षेत्रों को हथियार तथा हर्जाने के बिना ही शान्ति स्थापित के प्रस्ताव रखे । जर्मनी ने इसे रूस की कमजोरी माना और कुछ मुश्किल शर्ते रूस के सामने रख दी । इसके बावजूद रूस ने इसे स्वीकार कर लिया । मार्च 1918 में रूस-जर्मनी में एक शान्ति सन्धि हुई तथा रूस युद्ध
से अलग हो गया। जर्मनी के यू-नौका नामक पनडुब्बियों ने ब्रिटिश बन्दरगाह की तरफ जाने वाले जहाजों को डुबोना शुरू कर दिया जिसमें लुसीतानिया नामक जहाज था इसमें कुछ अमेरिकी यात्री भी सवार थे । अमेरिका ने 6 अप्रैल, 1914 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। 1 जुलाई
1918 में ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ने संयुक्त सैनिक अभियान शुरू कर दिया । इससे जर्मनी तथा उसके सहयोगी देशों की हार होने लगी। 3 नवम्बर, 1918 को आस्ट्रिया तथा हंगरी के सम्राट ने आत्मसमर्पण कर दिया । नई जर्मन सरकार ने 11 नवम्बर, 1918 को युद्ध विराम सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिया । इस प्रकार युद्ध समाप्त हो गया ।इसके बाद अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने एक चौदह सूत्री शांति कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो वर्साय की सन्धि के नाम से विख्यात हुआ ।

वर्साय की सन्धि-जनवरी और जून 1919 के बीच विजयी शक्तियों का एक सम्मेलन पेरिस में हुआ। अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लायड जार्ज तथा फ्रांस के प्रधानमंत्री जॉर्ज क्लीयमेंशु ही प्रमुख थे जो शांति संधि की शर्ते तय कर रहे थे तथा पराजित राष्ट्रों
के सिर मढ़ रहे थे । इसके अन्तर्गत कई प्रतिबन्ध लगाए गए। जैसे फ्रांस को अल्सास-लारेन का क्षेत्र वापस दे दिया गया, जर्मनी के सार क्षेत्र की कोयला खदानों 15 वर्षों के लिए फ्रांस को दे दी गई । जर्मनी को अपना कुछ भाग अन्य देशों को भी दे दिया गया जर्मनी की सेना 1 लाख तक सीमित कर दी गई, जर्मनी के सारे उपनिवेश विजयी राष्ट्रों में बाँट लिया । युद्ध में मित्र-राष्ट्रों को जो हानि हुई उसका हर्जाना भी जर्मनी को ही 6 अरब 10 करोर पौंड के रूप में भरना था । आस्ट्रिया-हंगरी को विभाजित कर दिया गया । बाल्टिक राज्य स्वतंत्र घोषित कर दिए गए। तुर्की को एक छोटे से राज्य के रूप में सीमित कर दिया गया ।
युद्ध और शांति संधियों के परिणाम-पूर्व के युद्धों की अपेक्षा प्रथम विश्वयुद्ध सबसे भयावह था । विभिन्न अनुमानों के अनुसार इससे लगभग 45 करोड़ लोग प्रभावित हुए, मरने वाली संख्या लगभग 90 लाख बतलाई गई है । लाखों लोग अपंग हो गए, हवाई हमलों तथा अकालों,महामारियों से भारी संख्या में असैनिक लोग मारे गए । राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई । प्रथम विश्वयुद्ध तथा इसके बाद की शांति संधियों के फलस्वरूप कई राजतंत्र नष्ट हो गए।
लोकतंत्र व्यवस्था का उदय हुआ एवं नई साम्यवादी सरकार से विश्व जनमत रू-ब-रू हुआ। रूस, जर्मनी तथा आस्ट्रिया-हंगरी के शासक वंश समाप्त हो गए । आस्ट्रिया एवं हंगरी दो अलग-अलग राज्य बन गए ।
चेकोस्लोवाकिया तथा युगोस्लोवाकिया स्वतंत्र देशों के रूप में उभरे । यूरोप का वर्चस्व समाप्त हो गया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका. विश्व शक्ति बनकर उभरा । कुछ ही समय
के बाद सोवियत-रूस भी विश्व शक्ति के रूप में उभरा ।
इस युद्ध से यूरोप की श्रेष्ठता का दावा भी धूमिल हो गया क्योंकि वह हमेशा इस बात को प्रचारित करता रहता था कि यूरोप तथा यूरोपीय लोग श्रेष्ठ हैं।

https://www.evidyarthi.in/

(द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि)
सभी राष्ट्र भविष्य में प्रथम विश्वयुद्ध की भयावता से बचना चाहते थे। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन भी बनाया गया लेकिन वर्साय तथा पेरिस की संधियों ने अगले विश्वयुद्ध की
पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। इन संधियों के द्वारा जिस तरह से पराजित राष्ट्रों पर निर्णय थोपे गए थे तथा उनका अपमान किया गया था, यह निश्चित था कि पराजित तथा अपमानित राष्ट्र अपने अपमान का बदला जरूर लेंगे। युद्ध को रोकने के लिए राष्ट्रसंघ नामक संस्था की स्थापना की
गई थी लेकिन वह युद्ध रोकने में असफल रहा।

(द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945)
शांति समझौतों से असंतुष्ट राज्यों ने 1936 के अंत तक इस व्यवस्था के अंतर्गत अपने कर्तव्यों से अपने को मुक्त कर लिया था। वे अपने अपमान तथा क्षति-पूर्ति का दावा कर रहे थे। ब्रिटीश सरकार ने नि:शस्त्रीकरण का उदाहरण पेश करने के लिए दावा करने का इरादा छोड़कर प्रतिरक्षा के नाम पर सशस्त्रीकरण में जुट गई। युद्ध को रोकने के लिए गठित राष्ट्रसंघ भी इन सभी घटनाओं पर मौन बना रहा।
अतः पेरिस संधि से लेकर 1939 तक की घटनाओं के फलस्वरूप द्वितीय विश्वयुद्ध भी निश्चित हो गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए जिम्मेदार कुछ प्रमुख कारण निम्न हैं-
(i) द्वितीय विश्वयुद्ध का बीजारोपण वर्साय की संधि में हो चुका था। शांति सम्मेलन के सिद्धांतों को विजयी राष्ट्र गुप्त संधियों के माध्यम से झुठलाते रहते थे जिसका भंडाफोड़ सोवियत रूस ने किया। विजयी राष्ट्रों की हकीकत जानकर पराजित राष्ट्र गुस्से से भर गए।
(ii) राष्ट्रसंघ के विधान पर हस्ताक्षर कर सभी राज्यों ने वादा किया था कि वे सामूहिक रूप से सबकी प्रादेशिक स्वतंत्रता की रक्षा तथा सम्मान करेंगे लेकिन व्यवहार में यह बिल्कुल विपरीत था। रूस को सदस्य नहीं बनाया गया था, अमेरिका ने सदस्य बनने से इंकार कर दिया। हिटलर चेक राज्यों को हड़पता रहा । चीन, जापान की साम्राज्यवादी नीतियों का शिकार होता रहा। धोखेबाजी की नीति से आक्रामक नीतियों को प्रोत्साहन मिला। मुसोलिनी को सफलता प्राप्त करता देख हिटलर ने भी आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया तथा पोलैंड पर चढ़ाई कर दी तथा इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया।
(iii) गुटबंदी और सैनिक संधिया भी द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए जिम्मेवार थीं। परिणामस्वरूप यूरोप दो गुटों में बँट गया था। इटली, जापान और जर्मनी एक ही सिद्धांत फासिज्म का अनुसरण करते थे। ये सभी वर्साय की संधि से क्षुब्ध थे तथा इसे तोड़ना चाहते थे। इसके विपरीत फ्रांस,
चेकोस्लोवाकिया तथा पोलैंड हर हाल में वर्साय की संधि को कायम रखना चाहते थे क्योंकि उन्हें इससे लाभ मिलता था। इस तरह गुटबंदी से पूरा माहौल विषाक्त तथा अविश्वासभरा हो गया था।
(iv) गुटबंदी तथा संशय के माहौल में प्रत्येक राष्ट्र अपने-आप को असुरक्षित महसूस कर रहा था इसलिए सभी देशों की रक्षा बजट बढ़ता जा रही थी। ब्रिटिश सरकार के वित्त मंत्री चेम्बरलिन ने 1937 में घोषणा की कि प्रतिरक्षा व्यय की पूर्ति अब केवल कर लगाकर नहीं की
जाएगी बल्कि इसके लिए चालीस करोड़ पौंड का ऋण लेने तथा पाँच वर्ष की अवधि में इसका बजट बढ़ा कर डेढ़ अरब पौंड करने का निर्णय लिया गया था। नौ सेना तथा वायु सेना पर जोर दिया जाने लगा, नये-नये हथियारों से प्रत्येक राष्ट्र अपनी सेना को सुसज्जित कर रहा था।
(v) राष्ट्रसंघ की असफलता भी कुछ हद तक इसके लिए उत्तरदायी थी। छोटे राज्यों की समस्या को तो राष्ट्रसंघ ने आसानी से सुलझा लिया। लेकिन समर्थ तथा शक्तिशाली राष्ट्रों के सहयोग न मिलने के कारण वह बड़े राष्ट्रों के मसलों को सुलझा न सका।
(vi) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1929-30 के काल में विश्वव्यापी आर्थिक मंदी आ गई थी। 1929 के शरद काल में अमेरिका से यूरोप को ऋण मिलना बंद हो गया था। सारे विश्व में क्रय शक्ति का हास हो गया। कीमतों में व्यापक और अनिष्टकारी गिरावट आ गई थी।

https://www.evidyarthi.in/

(vii) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी में हिटलर के नेतृत्व में नाजी सरकार बनी तथा इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवादी सरकार बनी। ये दोनों सिद्धांत राष्ट्र के गौरव तथा शक्ति पर बल देते थे। अतः अपने राष्ट्र के प्रसार के लिए इन लोगों ने दूसरे राष्ट्रों पर आक्रमण करना शुरू
कर दिय। जापान, जर्मनी और इटली अपने साम्राज्य का विस्तार कर अपने-आपको आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाना चाहते थे। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् जापान को प्रादेशिक लाभ हुआ था जिसके कारण उसका साम्राज्यवाद विस्तार आवश्यक हो गया। इस प्रकार जर्मनी, इटली तथा जापान की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बनी।

युद्ध का आरंभ-

1 सितम्बर, 1939 को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया तथा इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध का आरंभ हो गया। ब्रिटेन तथा फ्रांस ने दो दिन के बाद 3 सितम्बर, 1939 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। रूस अपनी सुरक्षा के लिए वाल्टिक के तीन प्रदेशों एस्टोनिया,
लैटविया और लिथुआनिया पर अपना प्रभाव जमाना चाहता था। अत: तीनों विदेश मंत्रियों तथा सोवियत संघ के बीच एक संधि हुई तथा रूस को इन राज्यों में अपनी सेना रखने की अनुमति मिल गई। 12 मार्च, 1940 को फिनलैंड ने भी रूस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया तथा रूस
को वे सारी सुविधाएँ प्राप्त हो गईं जिन्हें वह अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक समझता था। 9 अप्रैल, 1940 को जर्मनी में नार्वे तथा डेनमार्क और जून 1940 तक बेल्जियम तथा फ्रांस पर कब्जा जमा लिया। 22 जून, 1941 को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया। अगस्त, 1942 को जर्मन सेना स्टालिनवाद तक पहुँच गई। यह युद्ध करीब 5 महीनों तक चला। इसके उपरांत रूसी सेनाओं ने मित्र राष्ट्रों के साथ मिलकर जर्मनी के विरुद्ध प्रबल आक्रमण शुरू कर दिए। फरवरी, 1943
ई. के हजारों जर्मन अफसर तथा सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया।
जापान ने 7 दिसम्बर, 1941 को हवाई द्वीप स्थित पर्ल हार्बर के अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर जबरदस्त हमला किया जिसके जवाब में अमेरिका ने 8 दिसम्बर, 1941 को जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 7 मई, 1945 को जर्मनी सेना के आत्मसमर्पण के बाद मित्र राष्ट्रों ने
जुलाई, 1945 को जापान पर भीषण आक्रमण कर दिया। 6 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने युद्ध के दौरान अत्यधिक विकसित हथियार एटम बम हिरोशिमा नामक शहर पर गिराया तथा 9 अगस्त 1945 को नागासाकी पर एटम बम गिराया। अत: जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया तथा द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम

(i) द्वितीय विश्वयुद्ध में लगभग 5 करोड़ से अधिक लोग मौत के घाट उतार दिए गए। इसमें लगभग 2.2 करोड़ सैनिक 2.8 करोड़ नागरिक शामिल थे। लगभग 1.2 करोड़ लोग यंत्रणा शिविरों में मारे गए। जापान पर की गई बमबारी से हुई क्षति का आकलन संभव नहीं था। मानवीय क्षति से अलग बड़े पैमाने पर भौतिक तथा आर्थिक संसाधनों का क्षय हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध की अनुमानित लागत लगभग 13 खरब 84 अरब 90 करोड़ डालर थी।
(ii) द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एशिया महाद्वीप में यूरोपीय राष्ट्रों की प्रभुता समाप्त हो गई। कहा जाता था कि इंग्लैंड के राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता था लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वह डुबने लगा। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत, श्रीलंका, बर्मा, मलाया, हिंदेशिया तथा बर्मा आदि
राष्ट्रों ने स्वतंत्रता प्राप्त की।
(iii) द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इंग्लैंड विश्व की सबसे बड़ी शक्ति नहीं रह गय। इंग्लैंड के उपनिवेश मुक्त हो गए। उसकी शक्ति तथा संसाधन सीमित हो गए। दूसरी तरफ अमेरिका तथा रूस अपनी असीम आर्थिक संसाधनों के कारण शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरे।
(iv) द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात संयुक्त राष्ट्रसंघ का निर्माण कर विश्व शांति को स्थापित रखने की चेष्टा की गई जो

https://www.evidyarthi.in/

आज भी कायम है।
(v) द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व साम्यवादी तथा पूँजीवादी खेमों में बँट गया। साम्यवादी खेमे का नेतृत्व रूस कर रहा था तथा पूँजीवादी खेमे का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था। तीसरे खेमे के रूप में नवोदित स्वतंत्र तथा विकासशील राष्ट्र थे।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/